डां रूचिरा ढींगरा.
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग,शिवाजी कालेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रेमचंद व्यक्तित्व और साहित्य साधना

हिन्दी और उर्दू के मूर्धन्य रचनाकार प्रेमचंद (31 जुलाई 1880 – 8 अक्टूबर 1936) का जन्म काशी के लम्ही ग्राम में एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था । इनके नाना गुरू सहाय राय एक सामान्य कृषक और पिता अजायब राय डाक तार विभाग के साधारण लिपिक थे। 5 वर्ष की आयु में इन्हें मां की ममता से और 14 वर्ष की आयु में पिता के संरक्षण से वंचित होना पड़ा । विमाता द्वारा दी गई यंत्रणाओं के कारण उनका शैशव असमय समाप्त हो गया । इनका मूल नाम धनपत राय था।इन्हें नवाब राय और मुंशी प्रेमचंद भी कहा जाता है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके पैतृक गांव में हुई । स्नातक शिक्षा प्राप्त करके ये स्कूल में अध्यापन कार्य करने लगे और अपनी मेहनत से डिप्टी इंस्पेक्टर के पद तक पहुंचे। स्वाधीनता संग्राम में इनकी रूचि को देखकर सरकार सशंकित हो गई जिससे इन्हें नौकरी से त्याग पत्र देना पड़ा,तत्पश्चात लेखन और अखबार में संपादन ही इनकी आजीविका के साधन बने।आर्य समाज के प्रभावस्वरूप, अपनी रूक्ष,कुरूप पत्नी को त्यागकर इन्होंने बालविधवा शिवरानी देवी से पुनः विवाह किया।इससे इनके जीवन में न केवल स्थिरता आई ये घर परिवार के प्रति अपने दायित्वों का भी समुचित रूप से निर्वाह कर सके। इनके तीन संताने हैं.. श्रीपत राय, अमृतराय , और कमला देवी श्रीवास्तव।
विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने इन्हें उपन्यास सम्राट कहकर संबोधित किया था।[देखिये, "प्रेमचंद मुंशी कैसे बने" (एचटीएम). अभिव्यक्ति. HTTP://WWW.ABHIVYAKTI-HINDI.ORG/SNIBANDH/2005/PREMCHAND.HTM. अभिगमन तिथि: 2008.)
प्रेमचंद एक संवेदनशील लेखक, जागरूक नागरिक, कुशल वक्ता तथा उच्च कोटि के संपादक थे।

प्रेमचन्द ने अपनी साहित्यिक रचनात्मक-दृष्टि को किसी एक विधा तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं

में साहित्य सृष्टि कर अपने पाठकों को लाभान्वित किया है। प्रमुखत: वे कथाकार के रूप मे प्रसिद्ध हुये और अपने जीवन काल में ही 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से सम्मानित हुए। इन्होंने अपना लेखन 'ज़माना' पत्रिका से किया।1907 मे इनका पहला कहानी संग्रह 'सोज़े वतन'प्रकाश में आया जिसमें संकलित दुनिया का सबसे अनमोल रत्न इनकी प ली प्रकाशित कहानी मानी गई। सौत (1 9 1 5) तथा कफन (1 9 3 6) कहानियां 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुई। उन्होंने 3 0 0 से कुछ अधिक कहानियाँ, 1 5 उपन्यास, 3 नाटक, 1 0 अनुवाद, 7 बाल-पुस्तकें तथा हजारों पृष्ठों लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की।

क) **उपन्यास**

प्रेमचन्द ने अपनी साहित्य साधना का प्रारंभ उपन्यास लेखन से शुरू किया। उनके सभी आरंभिक उपन्यास मूल रूप से उर्दू में लिखे गए और कालांतर में उनका हिंदी अनुवाद किया गया।

1) असरारे मआबिद उर्फ़ देवस्थान रहस्य'((उर्दू उपन्यास (अपूर्ण), यह 'उर्दू साप्ताहिक ''आवाज-ए-खल्क़'' में 8 अक्टूबर, 1903 से 1 फरवरी, 1905 तक धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ।)

2) 'हमखुर्मा व हमसवाब' (हिंदी रूपांतरण 'प्रेमा' नाम से 1907 में प्रकाशित)

3) 'सेवासदन' (1 9 1 8) (यह मूल रूप से उर्दू में 'बाजारे-हुस्न' नाम से लिखा गया किन्तु हिंदी रूप 'सेवासदन' पहले प्रकाशित हुआ, इसमें परिस्थितिवश' नारी के वेश्या बनने की कथा है।)

4) 'प्रेमाश्रम' (1 9 2 1) (पहले उर्दू में 'गोशाए-आफियत' नाम से तैयार हुआ पर हिंदी में पहले प्रकाशित हुआ। 'प्रेमाश्रम' अवध के किसान आंदोलनों के दौर में लिखा गया हिंदी का शायद पहला उपन्यास है।

5) 'रंगभूमि' (1 9 2 5), (इसमें 'एक अंधे भिखारी सूरदास को कथा नायक बनाया गया जिससे हिंदी कथा साहित्य में क्रांतिकारी बदलाव का सूत्रपात हुआ)

6)कायाकल्प' (1 9 2 6),

7) 'निर्मला' (1 9 2 7),

8)'गबन' (1 9 3 1), '

9) कर्मभूमि' (1 9 3 2)

10) 'गोदान' (1 9 3 6) (गोदान में लेखक की साहित्यिक मान्यताएं 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' से 'आलोचनात्मक यथार्थवाद' तक आकर पूर्णता को प्राप्त करती है। इसमें

एक साधारण किसान उपन्यास का नायक बन भारतीय उपन्यास परंपरा की दिशा बदल देता है। सामंतवाद और पूंजीवाद के चक्रव्यूह में फंसकर कथानायक होरी की मृत्यु पाठकों को झकझोर देती है। इस समय तक आकर प्रेमचंद का आदर्शवाद से मोह भंग हो चुका था।

11) 'मंगलसूत्र' अधूरा उपन्यास है। (यह बाद मे इनके पुत्र अमृत राय ने पूरा किया)

अन्य उपन्यास..

12)वरदान

13) प्रतापचंद्र

14) श्यामा

15) कृष्णा

16) प्रतिज्ञा

17) अलंकार

ख) **कहानियाँ.....**

प्रेमचंद ने लगभग 3 0 1 कहानियाँ लिखी हैं जिनमें 3 अभी भी अप्राप्य हैं। इन्होंने अधिकतर कहानियोँ मे निम्न व मध्यम वर्ग की समस्याओं को अपना विषय है। प्रेमचंद का पहला कहानी संग्रह सोज़े वतननाम से जून 1 9 0 8 में प्रकाशित हुआ जिस की पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' प्रेमचंद की पहली प्रकाशित कहानी मानी जाती है। डॉ॰ गोयनका के अनुसार कानपुर से निकलने वाली उर्दू मासिक पत्रिका ज़माना के अप्रैल अंक में प्रकाशित सांसारिक प्रेम और देश-प्रेम (इश्के दुनिया और हुब्बे वतन) वास्तव में उनकी पहली प्रकाशित कहानी है।[डॉ कमल किशोर गोयनका (संपादक) - "प्रेमचंद कहानी रचनावली", ६ भागों में, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, भूमिका (भाग-१))..प्रेमचंद के जीवन काल में कुल नौ कहानी संग्रह 'सप्त सरोज', 'नवनिधि', 'प्रेमपूर्णिमा', 'प्रेम-पचीसी', 'प्रेम-प्रतिमा', 'प्रेम-द्वादशी', 'समरयात्रा ', 'मानसरोवर' : भाग एक व दो और 'कफन' प्रकाशित हुए । उनकी मृत्यु के बाद उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' शीर्षक से 8 भागों में प्रकाशित हुई। उनकी कहानियों में विषय और शिल्प की दृष्टि से विविधता मिलती है। उन्होंने मनुष्य से लेकर पशु-पक्षियों तक को मुख्य पात्र बनाया है। उनकी कहानियों में किसानों, मजदूरों, स्त्रियों, दलितों, आदि की समस्याएं चित्रित हैं। उन्होंने समाजसुधार, देशप्रेम, स्वाधीनता संग्राम ऐतिहासिक , प्रेम संबंधी कहानियाँ लिखी हैं।

उन की **प्रमुख कहानियों** हैं- नैराश्य लीला,'पंच परमेश्वर', 'गुल्ली डंडा', 'दो बैलों की

कथा', 'ईदगाह', 'बड़े भाई साहब', 'पूस की रात', 'कफन', 'ठाकुर का कुआँ', 'सद्गति', 'बूढ़ी काकी', 'तावान', 'विध्वंस', 'दूध का दाम''मंत्र' अलगोझा, आखिरी तोहफा, अपनी करनी,अमृत, आखिरी मंजिल, आत्माराम, आधार, इस्तीफा, ईश्वरीय न्याय, उद्धार, कवच, कर्मो का फल, कातिल, घर जमायी, जेल, जुलूस, दुर्गा का मंदिर, दूसरी शादी, नेकी, पत्नी से पति, मनोवृत्ति, लेखक, लैला, स्वांग, सौत, स्वर्ग की देवी, रहस्य, जंजाल, म हरी, सांसारिक प्रेम और देशप्रेम, जीवनसार आदि।

ग) **लघु कथा**

1) बाबा जी का भोग

घ) बाल साहित्य...

1)कुत्ते की कहानी

2)जंगल की कहानियां

3)रामचर्चा

4)मनमोदक

5)दुर्गा दास

6)स्वराज के फायदे

7)मिट्ठू

8)पागल हाथी

9)नादान दोस्त

च)**संस्मरण.**

1) एक शांत नास्तिक संत/प्रेमचंद/जैनेन्द्र कुमार

छ) **नाटक**.

1) 'संग्राम' (1923), '

2) कर्बला' (1924)

3) 'प्रेम की वेदी' (1933)

4) सृष्टि

5) बूढी काकी और अन्य नाटक

ये नाटक शिल्प और संवेदना की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं लेकिन इन्हें कोई खास सफलता नहीं मिली। अतः ये नाटक संवादात्मक उपन्यास बन कर रह गये।(देखिये हिंदी का गद्य साहित्य - डॉ॰ रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006, पृष्ठ संख्या- 5

ज) **लेख/निबंध**.

प्रेमचंद एक सजग,जागरूक नागरिक व उच्च कोटि के संपादक भी थे। उन्होंने 'हंस', 'माधुरी', 'जागरण' आदि पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया व तत्कालीन साहित्यिक पत्रिकाओं 'चाँद', 'मर्यादा', 'स्वदेश' आदि में अपनी साहित्यिक व सामाजिक चिंताओं को लेखों या निबंधों द्वारा अभिव्यक्त किया।

प्रेमचंद के लेखों के संकलन

1) 'प्रेमचंद : विविध प्रसंग' (तीन भाग) (अमृतराय द्वारा संपादित)

2) कुछ विचार (प्रेमचंद प्रकाशन संस्थान से प्रकाशित)

प्रेमचंद के कतिपय प्रसिद्ध लेखों में हैं-

साहित्य का उद्देश्य, पुराना जमाना नया जमाना, स्वराज के फायदे, कहानी कला (1,2,3), कौमी भाषा के विषय में कुछ विचार, हिंदी-उर्दू की एकता, महाजनी सभ्यता, उपन्यास, जीवन में साहित्य का स्थान आदि।

झ) **लेख**

1)अहदे अकबर मे हिंदुस्तान की हालत

2)इत्तेफाक ताकत है

3)आबशारे न्याग्रा

4)जान आफ आर्क

5) कलामे सुरुर

6) शहीदे आजम

7) पद्मसिंह शर्मा के साथ तीन दिन

ट) **अनुवाद**.

प्रेमचंद एक सफल अनुवादक थे। वे अन्य भाषाओं के लेखकों को पढ़ते थे और उनके विचारों से प्रभावित होने पर उनकी कृतियों का अनुवाद भी करते थे। '

1) जवाहर लाल नेहरु के पत्र पुत्री के नाम

2) टॉलस्टॉय की कहानियाँ' (1 9 2 3),

क) एक चिंगारी घर को जला देती है

ख) क्षमादान

ग) दो वृद्ध पुरूष

घ) ध्रुवस्वामिनी रीछ का शिकार
च) प्रेम मे परमेश्वर
छ) मनुष्य का जीवन आधार क्या है
ज) मूर्ख सुमंत
झ) राजपूत कैदी
3) गाल्सवर्दी के तीन नाटकों काअनुवाद क)'हड़ताल' (1 9 3 0),
ख) 'चाँदी की डिबिया' (1 9 3 1)
ग)'न्याय' (1 9 3 1)
4) रतननाथ सरशार के उर्दू उपन्यास 'फसान-ए-आजाद' का बहुचर्चित हिंदी अनुवाद
क) 'आजाद कथा'

ठ) **पत्र.**
1) अहमद अली के नाम
2) सज्जाद जहीर के नाम 7 पत्र
3) पंडित देवीदत्त शुक्ल के नाम 5 पत्र
4) प्रेमचंद महताबराय पत्राचार
5) पंडित जी के नाम
6) दो सखियाँ

1 9 3 0 मे चर्चित पत्रिका हंस के कारण प्रेमचंद के नाम से पहले मुंशी जुड़ गया। हिंदी कथा साहित्य के महान साहित्यकार का असली नाम धनपत राय श्रीवास्तव था, लेकिन हिंदी साहित्य में उन्हें ख्याति प्रेमचंद नाम से मिली। उर्दू लेखन के शुरू के दिनों में उन्होंने अपना नाम नवाब राय भी रखा था। उनके पिता अजायब राय और दादा गुरु सहाय राय थे। अतः कहीं भी मुंशी नाम नहीं आता। वास्तविकता यह है कि वकील, हिंदी अंग्रेजी गुजराती के प्रसिद्ध लेखक, राजनेता व विद्वान कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने महात्मा गांधी की प्रेरणास्वरूप प्रेमचंद के साथ मिलकर हिंदी की पत्रिका -'हंस'.निकाली। पत्रिका के संपादन का कार्य के.एम मुंशी और प्रेमचंद दोनों करते थे। के.एम मुंशी उम्र में प्रेमचंद से सात साल बड़े थे अतः वरिष्ठता के कारण पत्रिका ' हंस' के कवर पृष्ठ पर संपादक के रूप में 'मुंशी-प्रेमचंद' का नाम जाने लगा. इसमें अंग्रेजी सरकार के गलत कदमों की खुलकर आलोचना होती थी।जल्दी हीअंग्रेजी सरकार ने प्रेस को जब्त करने का आदेश

दे दिया। प्रेमचंद के सिर पर कर्ज आ गए । स्वतंत्र लेखन में के.एम मुंशीकी तुलना में प्रेमचंद काफी लोकप्रिय थे। इस तरह लोगों को गलतफहमी हुई कि प्रेमचंद ही 'मुंशी-प्रेमचंद' हैं। अखबार और मीडिया के विभिन्न माध्यमों के अभाव के कारण इस भूल को सुधारा भी नहीं गया। प्रेमचंद से पूर्व तिलस्मी,जासूसी ,अय्यारी और धार्मिक कहानियां लिखी जाती थी । प्रेमचंद ने सर्वप्रथम यथार्थवादी कहानियों के लेखन की दिशा निर्देशित की। ग्रामीण जीवन से उनका गहरा , प्रगाढ़ परिचय था। उस जीवन की सच्चाइयों अंधविश्वासों अज्ञान, फूट,अराजकता, शोषण तथा अंत हीन ऋण में डूबे जीवन के ये प्रत्यक्ष दर्शी और भुक्तभोगी भी थे ।

इन के अनुभूत सत्य पर आधारित होने के कारण इन का चित्रण सजीव और यथार्थवादी है। ग्रामीण नारियों की दयनीय अवस्था से भी ये अपरिचित नहीं थे और इनकी अधिकांश नारी प्रधान कहानियों में नारी चित्रण सजीवता से अंकित है।

प्रेमचंद के मतानुसार साहित्य को देशभक्ति और राजनीति के पीछे ना चलकर उसके आगे आकर, मशाल लेकर चलना चाहिए। अपनी इस मान्यता को उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से सिद्ध किया है। प्रेमचंद ने चलचित्र जगत में भी अपना भाग्य आजमाया। उन्होंने मोहन दयाराम भवनानी कीअजंता सिनेटोन कंपनी में नौकरी की।सन् 1 9 34 में मजदूर फिल्म की कथा भी लिखी किंतु अपनी कृतियों की चलचित्र के रुप में प्रस्तुति से वे संतुष्टि ना पा सके और इसीलिए कॉन्ट्रैक्ट की 1 वर्ष की अवधि पूरी किए बिना 2 महीने का वेतन छोड़कर, बनारस लौट आए। अपने जीवन के उत्तरार्ध में वे यथार्थ से आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की ओर उन्मुख हुये।उन पर हिंदी में पर्याप्त कार्य हो चुका है। अमृतराय और श्री मदन गोपाल ने उनके पत्रों को सहेजने का महत्वपूर्ण कार्य किया और डा. कमल किशोर गोयनका ने 'प्रेमचंद का साहित्य'(दो भाग) तथा 'प्रेमचंद विश्वकोश' का संपादन करके उन्हें पाठकों के लिए सहज सुलभ किया।आकार की दृष्टि से असीमित और गुणों की दृष्टि से अमूल्य प्रेमचंद की विरासत ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है।किस्सागोई, यथार्थ, जीवन्त चरित्र योजना तथा उद्देश्य से युक्त उनका कथा साहित्य पाठकों को परिस्थितियों से संघर्ष करने की प्रेरणा देता है।